घर घर में गूँज रही | By Rajendra Jain |

घर घर में गूँज रही
हनुमान की लीलाएँ
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

सुन जामवंत के बोल
हनुमान ने ये ठानी
श्री राम ऊँचे चले
चाहे नीचे था पानी
प्रभु राम के काज करन
हनुमान थे अकुलाए
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

जब लंकिनी ने रोका
लंका के द्वार पर
वध किन्हा आगे बढ़े
पांघट के किनारे पर
कहा बंदी बने माता
उसे कौन ये बतलाए
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

कुछ दानवियाँ मिलकर
करती थी ये चर्चा
वाटिका अशोक में दे
सीता सत का पर्चा
रावण का चंद्र खड़ग
सती को न छू पाए
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

बंदी थी जहाँ माता
भागे हनुमंत उस ओर
तुम लाए बिना रघुनाथ
ज्यूँ चंद्र के बिना चकोर
उस विरह अवस्था में
हनु दर्शन का सुख पाए
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

सिया माँ के चरणों में
प्रभु मुद्रिका जब फेंकी
मुंदरी स्वामी की है
ये सोच के फिर देखी
माया भी दानव कर
कोई चाल नई लाए

कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

तुम्हें राम दुहाई माँ
मुझ पर विश्वास करो
श्री राम का सेवक हूँ
मत मुझसे मात डरो
रघुवर के अनाथ में
हर बात है बतलाए
कर पार समुंदर को
सीता के सुधि लाए

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%98%e0%a4%b0-%e0%a4%98%e0%a4%b0-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-%e0%a4%97%e0%a5%82%e0%a4%81%e0%a4%9c-%e0%a4%b0%e0%a4%b9%e0%a5%80-by-rajendra-jain/